गणेश जी की आरती
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा॥
एक दंत दयावंत, चार भुजा धारी।
माथे सिंदूर सोहे, मूसे की सवारी॥
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा॥
पान चढ़े फल चढ़े, और चढ़े मेवा।
लड्डुअन का भोग लगे संत करें सेवा॥
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा॥
अंधन को आंख देत, कोढ़िन को काया।
बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया॥
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा॥
सूर' श्याम शरण आए, सफल कीजे सेवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा॥
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा॥
दीनन की लाज रखो, शंभु सुतकारी।
कामना को पूर्ण करो जाऊं बलिहारी॥
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा॥

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा बसन्तं हृदयारबिन्दे भबं भवानीसहितं नमामि।।

मंगलम भगवान् विष्णु
मंगलम गरुड़ध्वजः |
मंगलम पुन्डरी काक्षो
मंगलायतनो हरि ||

सर्व मंगल मांग्लयै शिवे सर्वार्थ साधिके |
शरण्ये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते ||

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बंधू च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव देव

कायेन वाचा मनसेंद्रियैर्वा
बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात
करोमि यध्यत सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि ||

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे
हे नाथ नारायण वासुदेव |
जिब्हे पिबस्व अमृतं एत देव
गोविन्द दामोदर माधवेती ||

सुखकर्ता दुखहर्ता वार्ता विघ्नाची,

नूर्वी पूर्वी प्रेम कृपा जयाची,

सर्वांगी सुन्दर उटी शेंदु राची,

कंठी झलके माल मुकताफळांची,

जय देव जय देव, जय मंगल मूर्ति,

दर्शनमात्रे मनकमाना पूर्ति,

जय देव जय देव|

रत्नखचित फरा तुझ गौरीकुमरा,

चंदनाची उटी कुमकुम केशरा,

हीरे जडित मुकुट शोभतो बरा,

रुन्झुनती नूपुरे चरनी घागरिया,

जय देव जय देव, जय मंगल मूर्ति,

दर्शनमात्रे मनकमाना पूर्ति,

जय देव जय देव|

लम्बोदर पीताम्बर फनी वरवंदना,

सरल सोंड वक्रतुंडा त्रिनयना,

दास रामाचा वाट पाहे सदना,

संकटी पावावे निर्वाणी रक्षावे सुरवंदना,

जय देव जय देव, जय मंगल मूर्ति,

दर्शनमात्रे मनकमाना पूर्ति,

जय देव जय देव|

शेंदुर लाल चढायो अच्छा गजमुख को,

दोन्दिल लाल बिराजे सूत गौरिहर को,
हाथ लिए गुड लड्डू साई सुरवर को,
महिमा कहे ना जाय लागत हूँ पद को,
जय जय जी गणराज विद्यासुखदाता,
धन्य तुम्हारो दर्शन मेरा मत रमता,
जय देव जय देव|
अष्ट सिधि दासी संकट को बैरी,
विघन विनाशन मंगल मूरत अधिकारी,
कोटि सूरज प्रकाश ऐसे छबी तेरी,
गंडस्थल मद्मस्तक झूल शशि बहरी,
जय जय जी गणराज विद्यासुखदाता,

धन्य तुम्हारो दर्शन मेरा मत रमता,

जय देव जय देव |

भावभगत से कोई शरणागत आवे,

संतति संपत्ति सबही भरपूर पावे,

ऐसे तुम महाराज मोको अति भावे,

गोसावी नंदन निशिदिन गुण गावे,

जय जय जी गणराज विद्यासुखदाता,

धन्य तुम्हारो दर्शन मेरा मत रमता,

जय देव जय देव|

जय देव जय देव, जय मंगल मूर्ति,

दर्शनमात्रे मनकमाना पूर्ति|